यज्ञ एवं पर्यावरण संरक्षण

सम्पूर्ण विश्व में जो सृजन, निर्माण और विकास की अवरिल धारा बह रही है तथा मन, प्राण और भूत का जो निरन्तर संयोग– वियोग हो रहा है, यही यज्ञ है। यज्ञ मानव शरीर में जीवित रहने और श्वास लेने की क्रिया भी है। इस विश्वव्यापी यज्ञ के साक्षात्कार के लिये प्रतीकों के रूप में भौतिक यज्ञों का विधान है, जो मन्त्रों का विषय है। ये यज्ञ मनुष्य और प्रकृति के बीच सेतु बनाते हैं। इनके माध्यम से मनुष्य प्रकृति से सम्बन्ध जोड़ता है और उसकी शक्तियों का उपयोग करने की क्षमता प्राप्त करता है। ऐसी मान्यता है कि अग्नि, इन्द्र और सूर्य के आह्वान द्वारा मनुष्य इन तीनों लोकों को जीत लेता है।

भौतिक यज्ञ करने से मनुष्य विश्व की शक्तियों का आह्वान कर उन्हें अपने में धारण करता है। अतः विभिन्न उद्देश्यों को लेकर अनेक प्रकार के यज्ञों का विधान है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन पांच महायज्ञ करने पड़ते हैं–

1. **देवयज्ञ** – इसमें भोजन, घी, दूध, दही अग्नि में डाला जाता है।

2. **भूतयज्ञ** – इसमें भोजन की बलि चारों तत्त्वों (पृथ्वी, जल, वायु, आकाश) प्रजापति, काम, विश्वदेवो आदि को दी जाती है।

3. **पितृयज्ञ** – इसमें पितरों के लिए दक्षिण दिशा की ओर भोजन, जल फैंका जाता है।

4. **ब्रह्मयज्ञ** – इसमें वैदिक पाठों का स्वाध्याय रखना पड़ता है।

5. **मनुष्य यज्ञ** – इसमें स्वयं भोजन करने से पहले किसी अतिथि को भोजन करवाया जाता है।

इसके अलावा उसे रोज सुबह व शाम अग्निहोत्र करना पड़ता है। सूर्योदय से पहले सूर्य और प्रजापति को और सूर्यास्त के बाद अग्नि और प्रजापति को जौ और चावल की आहुति दी जाती है। महीने में दो बार, प्रतिपदा और पूर्णिमा को दशपूर्णमासेष्टि की जाती है, इनमें क्रमशः अग्नि और इन्द्र तथा अग्नि और सोम को पुरोडाश् (अन्न का परांठा) दिया जाता है। अग्नि तीन

प्रकार की होती है – गार्हपत्य, दक्षिण और आहवनीय। गार्हपत्य की वेदी गोल और दक्षिण की अर्धवृत्त के आकार की होती है। आहवनीय अग्नि की वेदी चौकोर होती है।

वर्ष में तीन बार बसन्त, वर्षा और शरद ऋतुओं के आरम्भ में क्रमशः वैश्वदेव, वरुणप्रधान और साकमेध यज्ञ किये जाते हैं। पहले अग्नि, सोम, सविता, सरस्वती और पूषा के लिये पांच तर्पण किये जाते हैं और इसके बाद मरुतों को पुरोडाश्, विश्वदेवों को दूध और द्यावापृथिवी को पुरोडाश् दिया जाता है, दूसरे में आटे की मेण्ढे और भेड़ की मूर्तियां ऊन से सानकर दूध के साथ वरुण और मरुतों को भेंट की जाती हैं और वर्षा के लिये करीर के फलों की बलि दी जाती है। तीसरे में पितरों को भोजनदिया जाता है, रुद्र त्र्यम्बक को बलि दी जाती है और इसके बाद हल के दो भागों की पूजा होती है। गृह उपचारों में श्रावण पूर्णिमा को विष्णु, वर्षा ऋतु और रावण के देवता को पकवान चढ़ाया जाता है और मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को आग्रहायणी का पर्व मनाया जाता है। इस अवसर पर मकानों की सफाई व सफेदी की जाती है। इनके अलावा शरद या बसन्त में पशुधन की वृद्धि के लिये शूल यज्ञ किया जाता है, जिसमें रुद्र को बैल की बलि दी जाती है।

वैदिक यज्ञों में सोमयज्ञ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इसे बड़े आदमी करते हैं। यह प्रायः बसन्त में नये वर्ष के आरम्भ में किया जाता था। इसे करने से पहले 16 याज्ञिक नियुक्त किये जाते हैं जो यजमन और उसकी पत्नी को दीक्षित करते हैं। फिर सोम की बूंटी खरीद कर गाड़ी में लाई जाती है। पहले दिन गर्म दूध की आहुति होती है, दूसरे दिन सोम को वेदी पर लाकर सिल–बट्टे पर पीसा और छनने से छाना जाता है, फिर इसे कलशों में भरकर दूध में मिलाया जाता है और फिर कटोरों में देवताओं को भेंट किया जाता है। प्रायः दिन में तीन बार सोम का सेवन होता है। तीसरे दिन अग्नि और सोम को बकरे की बलि दी जाती है और अन्त में यजमान अवभृष नामक स्नान करता है। सोमयज्ञ भी सात प्रकार के हैं। इन्हें वाजपेय शक्ति प्राप्त करने के लिये किया जाता है। इनमें रथों की दौड़ खास तौर से होती है। ये राजसूर्य और अश्वमेध राजाओं के लिये हैं। ये यज्ञ लम्बे चलते हैं।

हमारी संस्कृति में यज्ञ प्रदूषित वायु को शुद्ध करने का आधार था। सभी लोग सदैव यज्ञ करते रहते तो परिवार एवं ग्राम का पर्यावरण प्रदूषित हो ही नहीं सकता। भगवान कृष्ण ने कहा, सबसे उत्तम यज्ञ वह है जिसमें किसी जीव की हत्या नहीं होती, जिस यज्ञ के द्वारा मनुष्य अपना जीवन परोपकार में लगा देते हैं, वह दूसरों के निमित्त जीने की विद्या है जो कालान्तर में अर्जुन को भी दी। यज्ञ में सूखी लकड़ियों का उपयोग करने हेतु उत्प्रेरित किया गया था।

वैदिक आर्यों का यह विश्वास है कि यज्ञों से आरोग्यता, संतति, वर्षा, राज्य, विद्या, सुख, शान्ति एवं परमात्मा की प्राप्ति होती है। सन् 1962 में देशी–विदेशी भविष्यवक्ताओं ने जब सम्पूर्ण संसार को प्रलय के कगार पर खड़ा पाया तो भारतवासियों को अपनी प्राचीन पद्धति 'यज्ञ' याद आयी। संसार के सभी सम्प्रदायों के यज्ञ प्रथा आज भी प्रचलित है। ये हैं–

1. भेषज्य यज्ञ
2. पुत्रेष्टि यज्ञ
3. अवर्षण यज्ञ
4. गोमेध यज्ञ
5. अश्वमेध यज्ञ तथा
6. पंचमहायज्ञ

यज्ञ से निकले धुएं का विश्लेषण करने पर पाया गया कि जलती हुई शक्कर में वायु शुद्ध करने की क्षमता पायी जाती है, इसके धुएं में क्षय, चेचक व हैजा आदि बीमारियों के कीटाणु नष्ट करने की क्षमता पायी जाती है। मुनक्का, किशमिश आदि फलों के धुएं में टाईफाईड के रोग–कीट मारने की क्षमता है। घी और चावल में क़ेशर मिलाकर जलाने से रोगकीट मर जाते हैं। धुएं के कड़वेपन को समाप्त करने के लिए 'अगर' को प्रयोग किया जाता है।

वायु प्रदूषण को रोकने और पर्यावरण शुद्धता हेतु वृक्षारोपण किया जाता था। हवा और पानी की तरह वृक्ष हमारे जीवन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। हमारे आदिग्रंथ ऋग्वेद से लेकर पुराण, उपनिषद, रामायण आदि में विभिन्न प्रकार के यज्ञों की महत्ता पर प्रकाश डाला है।

वायुमण्डल दूषित होने के कारणों में वैज्ञानिक अनाचार में उत्पन्न कूड़े–कचरे की अभिवृद्धि भी है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, कोलाहल, विकिरण आदि बढ़ने से अन्तरिक्ष में बढ़ती विषाक्त और उससे उत्पन्न विभीषिका की चर्चा सर्वत्र होती रहती है। इसके अतिरिक्त मनुष्यों के अनाचरण भी प्रकृति सन्तुलन को विक्षुब्ध करते हैं। फलतः मौसम, बाढ़, वर्षा, भूकम्प, तूफान, युद्ध, महामारी, कृमिकीट, दुर्भिक्ष आदि की विपत्तियाँ आती हैं। वनस्पति का विनाश हो जाता है। इसमें पोषक तत्त्व घट जाते हैं और वायु में जीवन तत्त्वों की कमी हो जाने से मनुष्य ही नहीं अन्य जीवधारियों की भी शारीरिक स्थिति बिगड़ जाती है तथा उनकी मनःस्थिति सामान्य और सुखद परम्परा अपनाए रहने योग्य नहीं रह जाती है। पर्यावरण से विषाक्त लोकमानस में निकृष्टता की मात्रा बढ़ती है, जिसकी वजह से स्नेह–सहयोग के स्थान पर द्वेष, दुर्भाव, मनमुटाव, स्वार्थ और विग्रह–अनाचार फैलने लगता है।

भौतिक क्षेत्र में सुख–सुविधा और शान्ति–व्यवस्था के साधन बढ़ाने के लिए भरपूर प्रयत्न होने चाहिए। कठिनाइयों को हल करने के लिए जो भी पराक्रम सम्भव हो उसे तत्परतापूर्वक किया जाना चाहिए, किन्तु ध्यान यह भी रखा जाए कि यह सब प्रयास सद्चिन्तन एवं सत्कर्म के मूल आधारों को अपनाकर ही किये जावें। इसके अलावा वायुमण्डल और वातावरण का परिशोधन उन अध्यात्मक प्रयत्नों पर निर्भर है, जिन्हें व्यक्तिगत धर्मधारणा एवं सामूहिक सह–साधना के आधार पर सम्पन्न किया जाता है। वायुमण्डल की परिशुद्धि के लिए यज्ञोपचार से बढ़कर और कोई शक्तिशाली माध्यम अब तक ढूंढा नहीं जा सका। इसी तरह वातावरण के परिशोधन के लिए गायत्री की व्यक्तिगत एवं सामूहिक साधनाएँ अत्यधिक कारगर सिद्ध हुई हैं।

यज्ञ के व्यापक प्रसार का अर्थ है – सद्चिन्तन एवं सत्कर्म के मूल आधारों का व्यापक विस्तार। इन्हीं भावनाओं को अपनाए जाने एवं जन–जन तक इनका विसतार होने से समस्याओं एवं विकृतियों को जड़ से उखाड़ा जा सकेगा। इनके तत्वज्ञान में मनुष्यता का जीवनदर्शन निहित है। ऐसा जीवनदर्शन जो जाति, धर्म, क्षेत्र एवं राष्ट्र की सीमाओं से परे है। जिसमें सवर्जन हिताय एवं सवर्जन सुखाय की मधुर भावनाएं संजोई हुई हैं। इसका विज्ञानपक्ष इससे भी कहीं अधिक मूल्यवान है। युगनिर्माण मिशन द्वारा अपनी स्थापना के समय से ही इसके विभिन्न प्रयोगों की शृंखला सम्पन्न की जाती रही है। इसके परिणाम भी आशातीत एवं कल्पनातीत रहे हैं। अब तक के अनुभवों के आधार पर ही कहा जा सकता है कि उज्ज्वल भविष्य की संरचना में जिस प्रकार का वातावरण अभीष्ट है उसे बनाने में यज्ञ से अधिक सफल प्रयोग दूसरा कोई नहीं, इसमें युग क्रान्ति के स्थूल और सूक्ष्म स्तर के उन सभी तत्त्वों का समावेश है, जो जनमानस को एवम् व्यापक वातावरण को परिष्कृत करके इक्कीसवीं सदी को सुनिश्चित रूप से उज्ज्वल भविष्य का स्वरूप प्रदान कर सकते हैं।

अभी हाल ही में शान्तिकुंज गायत्री परिवार द्वारा गुना (म.प्र.) में अश्वमेध यज्ञ करवाया गया था, जिसमें वहाँ के कृषि उपसंचालक ने विभिन्न आंकड़े एकत्रित कर यज्ञों को कृषि के लिए उपयोगी प्रतिपादित किया। गोरखपुर यज्ञ में वहाँ के वैज्ञानिकों ने उत्तरप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से बड़े–बड़े उपकरण लेकर पर्यावरण का अध्ययन किया और चौंकाने वाले निष्कर्ष निकाले जो इस प्रकार है–

1. वैज्ञानिक — जिन्होंने प्रयोग किए :
डॉ. मनोज गर्ग
डाइरेक्टर एनवायरमेण्टल एण्ड
टेक्निकल कन्सल्टेन्ट्स।

2. स्थान : यज्ञशाला से 20 मीटर दूरी पर पूर्व की ओर।
3. प्रयोग विधि : हाई वोल्यूम सैम्पलर एनविरोटेक ए.पी.एम.-45।
4. वायु के : प्रति 100 मिलीग्राम तथा
5. पानी के प्रति 100 मिलीलीटर

निष्कर्ष

अवधि	**सल्फर डाइऑक्साइड**	**नाइट्रस ऑक्साइड**
यज्ञ से पूर्व	3.36	1.16
यज्ञ की अवधि में	2.82	1.14
यज्ञ के पश्चात्	0.80	1.02

जल में बैक्टीरिया (जीवाणु)

यज्ञ से पूर्व	4500
यज्ञ की अवधि में	2470
यज्ञ के पश्चात्	1250

इन आंकड़ों के आधार पर वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाले कि यज्ञ कैन्सर जैसी जानलेवा और प्रदूषणजन्य, कष्टप्रद बीमारियों को भी रोकने में समर्थ हो सकते हैं। इसी प्रमाण पत्र में बताया है कि विभिन्न यज्ञ कुण्डों से प्राप्त यज्ञ भस्म (ASH) का प्रयोगशाला में रासायनिक–विश्लेषण करने पर निम्न खनिज पाए गए–

1.	फास्फोरस	4076 मि.ग्रा/कि.ग्रा.
2.	पोटेशियम	3407 मि.ग्रा/कि.ग्रा.
3.	कैलशियम	7822 मि.ग्रा./कि.ग्रा.
4.	मैगनीसियम	6424 मि.ग्रा./कि.ग्रा.
5.	नाइट्रोजन	32 मि.ग्रा./कि.ग्रा.
6.	क्वाइस्पार	2% W/W

इससे स्पष्ट है कि यज्ञों से पृथ्वी की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाया जा सकता है। उपसंचालक कृषि गुना (म.प्र.) ने गुना यज्ञ के पश्चात् इस आशय की एक रिपोर्ट पिछले और यज्ञ के समय की कृषि उपज आँकड़ों के साथ दी।

शान्ति कुंज गायत्री परिवार के संचालक परमपूज्य गुरुदेव कहते थे कि पर्यावरण में बढ़ते जा रहे प्रदूषण की दिन–रात सफाई की जाए, इसके स्थान पर उसे इतना शक्तिशाली बनाया जाना चाहिए कि प्रकृति में सफाई की स्वयं संचालित प्रक्रिया अपने आप चलती रहे। वे कहते थे वनौषधियों – जिनमें, तुलसी, ज्योतिष्मयी, निर्गुण्डी, पोदीना, पुनर्नवा, अश्वगंधा, चिरयता तथा देववृक्ष,

पीपल, गूलर, बरगद, आँवला, आम आदि वृक्षों का व्यापक वृक्षारोपण अभियान चलाना चाहिए। सीता अशोक ध्वनि प्रदूषण रोकने में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तुलसी जैसे पौधों से निकलने वाली गंध वातावरण को बहुत शक्ति देती है तथा कीटनाशक भी है।

शतपथ ब्राह्मण ने अश्वमेघ यज्ञों की इष्टियों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है–

एष वै दीर्घो नाम यज्ञः।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्त आ दीर्घारण्य जायते।।

अर्थात्– इस यज्ञ का एक नाम 'दीर्घ' है। जहाँ इस यज्ञ का अनुष्ठान होता है वहाँ पुण्य वन सम्पदा की अभिवृद्धि होती है। अतः हम कह सकते हैं कि यज्ञ हमारे 'पर्यावरण संरक्षण' में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

❑❑